ओ३म्

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्

आर्य्य मार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक

वैदिक संस्कृति संरक्षण एवं सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजा पार्क, जयपुर

वर्ष : 92 अंक : 13
वैशाख कृष्ण पंचमी
विक्रम संवत् 2075
कलि संवत् 5119
05 अप्रेल 2018 से 21 अप्रेल 2018
दयानन्दाब्द : 194
सृष्टि संवत् : 01,96,08,53,119
मुख्य सम्पादक :
डॉ. सुधीर शर्मा – 9314032161
संपादक मंडल :
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री ओम मुनि, ब्यावर
श्री विजयसिंह भाटी , जोधपुर
डॉ. बलवंत शास्त्री, बहरोड़, अलवर
डॉ. स्नेहलता शर्मा, राज. सस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर
श्री हरिपाल शास्त्री , अलवर
श्री जगदीश आर्य, जखराणा, अलवर
श्री ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति, जयपुर
डॉ. संदीपन आर्य, जयपुर
श्री बृजेन्द्र देव आर्य्य , अलवर
श्री अनिल आर्य, जयपुर
प्रकाशक : आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
दूरभाष : 0141 – 2621879
प्रकाशन : दिनांक 5 एवं 21
पत्र व्यवहार का अस्थाई पता :
डॉ. सुधीर शर्मा सम्पादक, आर्य्य मार्तण्ड, 42, मुक्तानन्द नगर, गोपालपुरा बाईपास , जयपुर – 302018। मो. – 9314032161
मुद्रक : राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशिएट्स, जयपुर
ग्राफिक्स : प्रिण्टपैक, जयपुर ।
ई–मेल : aryamartand@gmail.com
arya.sabha1896@gmail.com
एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया
ऑनलाईन प्राप्ति :
www.thearyasamaj.org/aryamart

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का उपवेशन सम्पन्न

दिनांक 23 मार्च 2018 को आर्य समाज हनुमान रोड़, नई दिल्ली परिसर में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली की अंतरंग सभा का उपवेशन हुआ। उक्त उपवेशन में सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रमेश जी अग्रवाल, मंत्री श्री प्रकाश आर्य, श्री विनय आर्य, मेघालय के महामहिम राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद जी, एम.डी. एच. के संस्थापक एवं महान् भामाशाह महाशय धर्मपाल जी के अतिरिक्त सभी प्रांतीय सभाओं के मंत्री एवं प्रधानों ने भाग लिया। राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा से मंत्री डॉ. सुधीर कुमार शर्मा एवं प्रधान श्री विजय सिंह भाटी भी उपवेशन में उपस्थित रहे। मंत्री डॉ. सुधीर कुमार शर्मा ने राजस्थान प्रदेश के आर्य समाजों की समस्याओं को बैठक में रखा। वैश्विक स्तर पर आर्य समाज की गतिविधियों के विस्तार, आगामी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, नई दिल्ली एवं आर्य समाज के प्रचारक कोष स्थापित करने पर विशेष निर्णय लिए गए। हर्ष का विषय यह है कि महाशय धर्मपाल जी के आर्थिक सहयोग से सभी प्रांतों में एक–एक प्रचारक की नियुक्ति का निर्णय लिया गया साथ ही महाशय जी ने प्रत्येक प्रांतीय सभा को 151000 का प्रचारक कोष हेतु आर्थिक सहयोग देने की भी घोषणा की गई

डॉ. सुधीर कुमार शर्मा
मंत्री राजस्थान

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से मेघालय के महामहिम राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद जी का स्वागत करते मंत्री डॉ. सुधीर कुमार शर्मा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली की अंतरंग सभा का उपवेशन में विचार व्यक्त करते हुए मंत्री डॉ. सुधीर कुमार शर्मा

योहि मित्रेषु कालज्ञः सततं साधु वर्तते । तस्य राज्यं च कीर्तिश्च प्रतापश्चाभिवर्धते।। –वाल्मीकि रामायण – किष्किन्धाकाण्ड, सर्गः 23 ।।
अर्थात् समय को जानने वाला जो पुरुष अपने मित्रों के साथ उत्तम व्यवहार करता है उसका राज्य, यश और प्रताप उत्तरोत्तर बढ़ता है।

महाशय धर्मपाल जी के 95वें जन्मदिवस ''प्रेरणा'' के हर्षोत्सव का भव्य आयोजन

दिनांक 26.03.2018 को तालकटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली में महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.) के 95वें जन्मदिवस ''प्रेरणा'' के हर्षोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। महाशय जी एम.डी.एच. मसाले, चिकित्सालय, शिक्षण संस्थान, अनुसंधान केन्द्र, वैदिक अनुसंधान केन्द्र, गोशाला आदि शताधिक संस्थाओं एवं उद्योगों के संस्थाप एवं संचालक हैं। आप 21वीं सदी के महान् भामाशाहों में से एक हैं जिन्होंने भारतीय धर्म–संस्कृति के संरक्षण–संवर्धन, गोशालाओं एवं वेद प्रचारार्थ हजारों करोड दान किये हैं। एक साधारण तांगेवाले ने अद्भुत एवं प्रेरणादायक आदर्श मानवमात्र के समक्ष प्रस्तुत किये हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान ईश्वर से आपके दीर्घायुष्य की कामना करती है– जीवेम शरदः शतात्

महाशय धर्मपाल जी के 95वें जन्मदिवस ''प्रेरणा'' के हर्षोत्सव के अवसर पर मंचस्थ अतिथिगण (डॉ. सुधीर कुमार शर्मा, श्री प्रकाश आर्य, श्री रमेश जी अग्रवाल, मेघालय के महामहिम राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद जी, केन्द्रिय मानवसंसाधन

राज्य मंत्री श्री सत्यपाल सिंह जी, महाशय धर्मपाल जी, डॉ. विनय विद्यालंकार एवं अन्य महानुभाव)

नवसंवत्सर पर यज्ञ द्वारा जीव मात्र की कामना

मगरा पूँजला स्थित आर्य समाज मंदिर, महर्षि पाणिनिनगर व नृसिंह जी कि प्याऊ मार्केट एसोसियेशन के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित भारतीय नववर्ष व आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया। प्रधान कैलाश चन्द्र आर्य ने बताया कि नववर्ष पर विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्म शिवराम शास्त्री व गजेसिंह द्वारा नवसंवत्सर पर जीव मात्र, समाज, परिवार, राष्ट्र में सुखदायक, मंगलकारी व समृद्धि दायक कि भावना से यज्ञ में आहुतियां प्रदान कि गई।

कैलाश चन्द्र आर्य, प्रधान

आर्य समाज लाडनूँ, नागौर

आर्य समाज दुजार, नागौर

कः कालः कानि मित्राणि कः देशः को व्ययागमोः । कस्याहं का च मे शक्तिरिति चिन्त्यं मुहुर्मुहुः ।। – अर्थात् कैसा समय है, कौन सा देश है, कौन मेरे मित्र हैं? मेरी आय–व्यय क्या है? मैं किसकी ओर हूँ और मेरी क्या शक्ति है! इसे बार–बार सोचना चाहिए।

दिव्य मातृत्व से ही दिव्य संतान निर्माण संभव

पुत्र का निर्माण करने के कारण ही नारी की संज्ञा माता है। जननी तो हर स्त्री होती है परन्तु माँ के विषय में कहा जाता है **'जो करे पुत्र निर्माण माता सोई'** और इसीलिए महर्षि मनु ने माँ को दस सहस्र आचार्यों के समान कहा है–

उपाध्यायान् दशाचार्य आचार्याणां शतं पिता।
सहस्रं तु पितृन माता गौरवेणातिरिच्यते।।

माँ सन्तान के नाम पर कूड़ा, कचरा पैदा कर धरती माँ का बोझ नहीं बढ़ाती थी, बल्कि ऐसी चरित्रवान, जितेन्द्रिय, वीर बहादुर व शक्तिशाली सन्तान का निर्माण करती थी जो भारत माँ के दर्द को दूर करने वाली होती थी। क्योंकि वेदों ने कहा है– **'वीरभोग्या वसुन्धरा'** अर्थात् ये भूमि वीरों के लिए है, कायर व कमजोर लोगों के लिए नहीं है। यही कारण था कि पहले यदि नारी अपने को निर्दोष प्रस्तुत करती थी तो इस बात की शपथ लेती थी। कहते हैं कि सप्तमहर्षि माता अरून्धती सहित यात्रा कर रहे थे। मार्ग में किसी वस्तु की चोरी हो गई। प्रत्येक अपनी सफाई देने लगा। माता अरून्धती कहती हैं 'जो पाप अयोग्य और दुर्बल सन्तान उत्पन्न करने का होता है वह पाप मुझे लगे, यदि मैंने चोरी की हो।' यहाँ स्पष्ट है कि प्राचीन मातायें अयोग्य और दुर्बल सन्तान पैदा करना महापाप समझती थीं।

योगीराज श्रीकृष्ण की वीरता, शौर्य, राजनीतिकता, प्रभुभक्ति, गोमाता प्रेम, सेवा भाव और धर्मशीलता से आप परिचित हैं, परन्तु इसका मूल भी आपको माता देवकी के अनुपम धैर्य, कष्ट, सहिष्णुता, रूप, तप, वीरता, ईश्वर प्रेम और माता यशोदा की लोरियों में देखना होगा। छत्रपति शिवाजी को सिंहगढ़ विजय की प्रेरणा करने वाली माता जीजाबाई थी। **''सिंहगढ़ विजय करो बेटा भगवा ध्वज चलकर फैराओ।''** भक्त ध्रुव का निर्माण करने वाली माता सुनीति थी। हनुमान का निर्माण अंजना ने किया, भीष्म पितामह की व्रतनिष्ठा का मूल उनकी माता गंगा की व्रतसाधना में छिपा है। आल्हा ऊदल की वीरता का रहस्य माता देवलीदेवी की शिक्षायें हैं। गोरा–बादल की प्राण संचारी शक्ति माता जवाहरबाई और हताश पुत्र संजय को धिक्कारते हुए पुनः कर्त्तव्य पथ पर आरूढ़ करने वाली वीर माता मदालसा के उदाहरण में सर्वाधिक स्पष्ट हुआ है। वे अपने तीनों पुत्रों विक्रान्त, सुबाहु एवं शत्रुमर्दन को शुद्वोऽसि, बुद्वोऽसि, निरंजनोऽसि, संसार माया परिवर्जितोऽसि का उपदेश करके विरक्त बना देती है। चौथे पुत्र अलर्क को भी जब यही उपदेश करने लगी तो राजा चिन्तित हो उठते हैं और कहते हैं 'देवि! इसे भी विरक्त बनाकर मेरी वंश परम्परा उच्छेद करने पर क्यों तुली हो? इसे प्रवृत्ति मार्ग में लगाओ और उसके अनूकुल ही उपदेश दो। मदालसा ने पति की आज्ञा मान ली और अलर्क को बचपन में ही व्यवहार–शास्त्र का पण्डित बना दिया। उसे राजनीति का पूर्ण ज्ञान कराया। धर्म, अर्थ और काम तीनों शास्त्रों में वह प्रवीण बन गया। बड़े होने पर माता–पिता ने अलर्क को राजगद्दी पर बिठाया और स्वयं वन में तपस्या करने के लिए चले गये। किसी कवि की पंक्तियाँ प्रसंगवश पठनीय हैं–

माता के सिखाये पुत्र कायर और क्रूर होत।
माता के सिखाये पुत्र दाता और शूर हैं।।
माता के सिखाये पुत्र ब्रह्मचारी बलवान होत।
माता के सिखाये पुत्र जग में मशहूर हैं।।

हमारी मातायें, बहिने, आज भी महर्षि दयानन्द, सुभाष चन्द्र बोस, सरदार बल्लभभाई पटेल, सरदार भगत सिंह, लाल बहादुर शास्त्री सरीखे लालों को निर्माण देकर वे अपने महान राष्ट्र को फिर जगद्गुरू बनाने में योगदान दे सकती हैं। इसके लिए उन्हें 'सन्तति निर्माण शास्त्र' का अध्ययन करना होगा। गर्भाधान से लेकर उपनयन संस्कार तक इसी विज्ञान का शिक्षण है। मनुस्मृति आदि धर्म शास्त्रों में भी इसके लिए आवश्यक विधान हैं। गर्भाधान प्रक्रिया के पीछे एक स्वस्थ्य कल्पना और उत्कृष्ट भावना, रहन–सहन किस प्रकार के चित्रों का अवलोकन किस प्रकार के ग्रन्थों का अध्ययन, बालक को किस–किसी प्रकार की लोरियाँ, रहन–सहन आदि किस प्रकार की कहानियाँ, कवितायें, गीत कण्ठस्थ कराना, कैसी स्त्रियों का साथ आदि किस प्रकार का शिष्टाचार को सन्तति निर्माण विज्ञान के अनेक विभाग हैं।

खेत में उत्तम फसल प्राप्त करने के लिए बीज डालने के पूर्व खेत को तैयार करना होता है। माँ ही वह खेत है। **''माता निर्माता भवति''** माँ ही निर्मात्री शक्ति है। मातायें ही किसी राष्ट्र और जन–जीवन की आधार शिला है परन्तु अपनी मनोभूमि को ऐसा बनाने के लिए, मानव जीवन के महत्व, ईश्वर भक्ति और मातृभूमि भक्ति के रहस्य को जानने के साथ ही इस युग के महिमामय क्रान्तिदर्शी ऋषि दयानन्द द्वारा लिखित सोलह संस्कारों की वैदिक विधि महत्व और प्रक्रिया को समझना आवश्यक होगा। रामप्रसाद बिस्मिल की माँ ने बचपन से ही अपने बच्चे को स्वामी दयानन्द का यह सन्देश सुनाकर **''गन्दे से गन्दा स्वदेशी राज्य, अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से अच्छा है।''** फाँसी की रस्सी को चूमने की प्रेरणा दी थी।

आज के युग की सबसे बड़ी समस्या है मानवता से युक्त सच्चे मानव का अकाल। आज यही समझना है कि आदर्श मानवों के इस अकाल को पुरूष नहीं स्त्रियाँ ही दूर कर सकती हैं क्योंकि स्त्री का वास्तविक स्वरूप माता का है और 'माता निर्माता भवति' माता ही राष्ट्र और जीवन की निर्मात्री शक्ति है। **'मातृवान–पितृवान, आचार्यवान पुरूषो वेदः'** शतपथ ब्राह्मण का यह वचन है। जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान बनता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में लिखा है कि वह सन्तान बड़ी भाग्यवान है जिसके माता–पिता धार्मिक, विद्वान् हों। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुँचता है उतना किसी से नहीं। जितना माता सन्तानों पर प्रेम और उनका हित करना चाहती है उतना अन्य कोई नहीं करता। इसलिए **''प्रशस्ता धार्मिकी माता यस्य स मातृवान''** धन्य वह माता है कि जो गर्भाधान से लेकर जब तक शिक्षा पूरी न हो तब तक सुशीलता का उपदेश करे।

रामप्रदसाद बिस्मिल को गोरखपुर की जेल में ब्रिटिश राज्य को उखाड़ने के प्रयत्न में फाँसी की सजा दी जा चुकी थी। भारत के गवर्नर जनरल ने क्षमा माँग लेने और भविष्य में वैसा न करने का आश्वासन देने पर फाँसी से छुटकारा देने का

आश्वासन दे दिया। रामप्रसाद बिस्मिल की फाँसी से एक दिन पूर्व उनके पिता उससे मिलने आये और उन्होंने पुत्र–प्रेम से विह्वल हो उसे क्षमा माँगने और भविष्य में स्वतन्त्रता के संग्राम में न कूदने की मार्मिक अपील की। पाठको! लेकिन एक आर्यवीर को मृत्यु भयभीत नहीं कर सकती थी। स्वामी दयानन्द के अनुयायी इस बिस्मिल के लिए मृत्यु कोई भयावली वस्तु नहीं थी। मृत्यु का अर्थ उसकी दृष्टि में था माँ की गोद में सो जाना। छोटा बच्चा दिन भर खिलखिलाता है, हँसता है, रोता है, गिरता है और रात्रि होते ही माँ उसे उठा लेती हैं यही हाल जीव का है। संसार से जीव को मृत्यु माता उठा लेती है। मृत्यु मानो महामाया है, महाप्रस्थान है, मृत्यु महा निद्रा है, मृत्यु मानो शान्ति है, मृत्यु मानो नवजीवन का आरम्भ है, मृत्यु मानो आनन्द का दर्शन है, मृत्यु मानो पर्व है, मृत्यु मानो प्रियतम के पास जाना है। तब भला यह मृत्यु रामप्रसाद बिस्मिल को कैसे भयभीत कर सकती थी। उसने पिता की प्रार्थना अस्वीकार कर दी। कुछ समय पश्चात् उसकी माँ पहुँची। माँ के पहुँचते ही बिस्मिल ने रोना शुरू कर दिया माँ के आश्चर्य का ठिकना नहीं रहा। माँ ने बेटे को फटकारते हुये कहा कि जब मरने से इतना ही डर लगता था तो इस मार्ग को क्यों चुना? माँ के इन वचनों को सुनकर वो बिस्मिल अपनी आँखों से आँसू पोंछते हुये बोला, ''माँ! मैं मृत्यु से डरकर नहीं रो रहा हूँ। मौत का मुझे कोई गम नहीं है परन्तु मैं तो इसलिए रो रहा हूँ कि मरने के बाद मुझे तुझ जैसी बहादुर माँ की गोद कहाँ मिलेगी?

वास्तव में माताओं ने अपने हृदय के तीव्र वेगों से जो चमत्कार किये हैं, उनके अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं। माता कौशल्या, माता अंजना, माता मदालसा, माता देवकी, माता यशोदा, जीजाबाई आदि के शत सहस्र उदाहरण हैं। जिन्होंने सन्तान निर्माण का आदर्श प्रस्तुत कर धन्यता और अमरता प्राप्त की है।

नारी नर का निर्माण करे।
मनु, व्यास, कृष्ण, राम जैसे पुत्रों को जने।
नारी गुण का आधान करे, प्रताप, शिवा, गोविन्द बने।

महाभारत का उदाहरण हमारे सामने है। वीर अभिमन्यु की माँ सुभद्रा अपने पति अर्जुन से चक्रव्यूह भेदन का ज्ञान प्राप्त करते–करते सो गई। परिणामतः बालक अभिमन्यु का शिक्षण अधूरा रहा और वह चक्रव्यूह से बाहर न निकल सकने के कारण पराजित हुआ। इतिहास साक्षी है कि शिवाजी महाराज ने राजमाता जीजाबाई ने गर्भकाल से ही शिक्षण दिया था। उनका उद्देश्य था कि वह बालक गो–ब्राह्मण प्रतिपालक एवं हिन्दू राष्ट्र का पुनरूत्थान करने वाला बने। इसलिए उन्होंने बालक शिवाजी के चरित्र का निर्माण करने वाला संस्कारप्रद वातावरण गर्भकाल से ही उपलब्ध कराया। संत ज्ञानेश्वर की माँ ने भी अनेक कष्ट सहकर राष्ट्रीय स्वाभिमान का एवं भक्ति से परिपूर्ण बालक का निर्माण किया और समाज हिताय समर्पित कर दिया। **'चिन्ता करितो विश्वाची'** यह वाक्य कहने वाला बालक नारायण की माँ सूर्य की उपासना करती थी। सूर्योपासक माता राणुबाई ने सूर्यसम दिव्य, तेजस्वी, विश्व की चिन्ता करने वाले सुपुत्र को जन्म दिया। यही बालक स्वामी रामदास के नाम से प्रसिद्ध हुआ। कहने का तात्पर्य है कि ऐसे अनेक उदाहरण हमारे इतिहास के पृष्ठों में छिपे हैं, जिनसे यह स्पष्ट होता है कि माता के प्रत्यनों के परिणामस्वरूप बालक की वैसी ही निर्मित हुई, जैसा वह चाहती थी।

माँ मार्गदर्शक होती है। वह जैसा चित्र बालक के मानस पर अंकित करती है, बालक वैसा ही बनता है। एक बार बातों–बातों में बालक नरेन्द्र ने कह दिया कि मैं तो कोचवान बनूँगा। ममतामयी माँ ने तुरन्त स्थिति को संभालकर कहा ठीक है तुम कोचवान ही बनना परन्तु श्रीकृष्ण जैसे। इतना कहकर उन्होंने अर्जुन का रथ हाँकते श्रीकृष्ण का चित्र दिखाया। हम देखते हैं कि स्वामी विवेकानन्द के रूप में जाने वाला यह बालक हिन्दू तत्व चिन्तन का सारथी बना और उसकी गूँज को विश्व गगन में फैला दिया। हर महान व्यक्तित्व के पीछे एक माँ छिपी है और छिपा है उसका ममत्व। श्रेष्ठ सन्तति के निर्माण हेतु माता का संस्कारित होना देश की आवश्यकता है। इसलिए आज बालिकाओं की शिक्षा इस प्रकार की हो या विचार होना चाहिए। उसके मन में स्त्रीत्व के प्रति हीन भावना न हो। उसे अपने नारी होने पर गर्व हो तथा वह स्वयं कन्या के प्रति जाग्रत हुई अनावस्था को दूर कर उसमें भावी माता के संस्कारों को भरने के प्रति सजग बने।

आज की माताओं को विचारना है कि उसे कैसा साहित्य पढ़ना होगा, घर का वातावरण कैसा हो। उसके मन हृदय में वर्तमान परिस्थिति के अनुसार भव्य दिव्य राष्ट्र की परिकल्पना एवं भक्ति कैसे जागृत हो? तभी वह भावी नागरिक को धर्मभिमुख कर्तव्य तत्पर एवं राष्ट्र के प्रति सजग बना सकती है। खाओ, पीओ, मस्त रहो। यह अपने देश की संस्कृति में नहीं है। अपनी संस्कृति में पर के लिए अर्थात् समाज, राष्ट्र, परिवार के लिए जीने की अवधारणा है। मातृत्व का यह केवल आज श्रृंगार भोग–विलास के मार्ग से प्राप्त हुआ जीवन का प्रसंग नहीं है, अपितु समझ–बूझकर स्वयं स्वीकारा हुआ एक महान पवित्रतम क्षण है। यह सच है कि कौशल्या केवल रानी होती और भोग–विलास में मस्त रहकर संतान को जन्म देती तो संतान राम न बनकर कुछ और होती। श्रीराम माता कौशल्या के संस्कारों का प्रतिफल है। हमारे देश की माताओं को भोगवादी संस्कृति से दूर रहना होगा। एक रोटी को बाँटकर खाने की प्रेरणा माँ ही अन्तःकरण में जाग्रत करती है। जब यहाँ के नागरिक भोगवाद से दूर रहकर, आर्य तत्वज्ञान को जीवन में उतार कर, स्वार्थ विहीन, भ्रष्टाचारमुक्त, दिव्य, तेजस्वी राष्ट्र के निर्माण में क्षमतावान बनेंगे तो देश समुन्नत होगा। यही दिव्य भाव माँ के हृदय में चाहिए। दिव्य मातृत्व, दिव्य नागरिक निर्माण करेगा और नागरिक निर्माण करेंगे समुन्नत राष्ट्र।

देवियाँ देश की जाग जाये अगर।
युग स्वयं ही बदलता चला जायेगा।।

लेखिका
डॉ. अर्चना प्रिय आर्य
ताराधाम कॉलोनी, टाउनशिप (मथुरा)

सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्प्रकाश उपजायते। ज्ञानं यदा तदा विद्याद्विवृद्धं सत्त्वमित्युत ।। गीता – 14/11।।
सत्त्वगुण की अभिव्यक्ति को तभी अनुभव किया जा सकता है, जब शरीर के सारे द्वार ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित होते हैं।

गुरुत्वाकर्षण के सर्वप्रथम अन्वेषक न्यूटन नहीं?

गुरुत्वाकर्षण बल के बारे में हम सभी जानते होंगे कि इस शक्ति के कारण ही पृथिवी सभी पदार्थों को अपनी ओर आकर्षित करती है और कहा जाता है कि यूरोपवासी **ऐसेकन्यूटन** ने सर्वप्रथम इसको जाना, तब से यह विद्या पृथ्वी पर फैली है तथा कुछ लोग यह भी मानते हैं कि न्यूटन से भी हजारों वर्षों पूर्व गुरुत्वाकर्षण की खोज **भास्कराचार्य जी** ने की थी। ये दोनों ही बातें यथार्थ नहीं हैं। इसका प्रमाण यह है कि भास्कराचार्य जी द्वारा प्रणीत **'सिद्धान्तशिरोमणि'** नामक ग्रन्थ में भास्कराचार्य जी ने स्वयं एक प्राचीन भारतीय आचार्य का श्लोक उद्धृत किया है जो गुरुत्वाकर्षण बल को भलीभांति बतला रहा है। जो इस प्रकार है कि–

आवृफष्टशक्तिश्च मही तया यत् खस्थं गुरु स्वाभिमुखीकरोति।
आवृफष्यते तत्पततीव भाति समे समन्तात् कुरियं प्रतीतिः।।

अर्थात् सर्वपदार्थगत एक आकर्षण शक्ति विद्यमान है, जिस शक्ति से यह पृथिवी आकाशस्थ पदार्थ को अपनी ओर करती है और जो यह खींच रही है वह गिरता मालूम होता है अर्थात् पृथिवी अपनी ओर खींच कर आकाश में फेंकी हुई वस्तु को ले आती है, इसको लोक में गिरना कहते हैं। इससे स्पष्ट है कि भास्कराचार्य से बहुत पूर्व यह विद्या देश में विद्यमान थी।–**वैदिक–विज्ञान पृ. 21**

पं. शिवशंकर शर्मा (काव्यतीर्थ)
गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ (उ.प्र.)

आर्य वीर दल राजस्थान के युवा चरित्र एवं व्यक्तित्व निर्माण शिविर

उदयपुर संभागीय शिविर

मई माह 2018
सम्पर्क : जीवनलाल जिला संचालक –9460080886
एम.पी. सिंह (संभाग संचालक) मों 7014133853

अजमेर संभागीय शिविर

आर्य वीर शिविर 23–30 मई 2018
आर्य वीरांगना शिविर 5–12 जून 2018, ऋषि उद्यान,
अजमेर सम्पर्क सूत्रः विश्वास पारीक मो. 9460016590
सुशील शर्मा मो. 7665447674

भरतपुर संभागीय शिविर

गंगापुर सिटी 14–20 मई 2018
सम्पर्क सूत्रः नरेन्द्र आर्य (जिला संचालक)
मों 9414986451
अभिषेक (नगर संचालक) मों 6375613300

जयपुर संभागीय शिविर

जयपुर संभागीय शिविर मई माह,
स्थान – आर्य समाज निंदड़
सम्पर्क दीपक शास्त्री (जिला संचालक)
मो. 9462965528

जोधपुर संभागीय शिविर

जोधपुर संभागीय शिविर मई माह,
स्थान –महर्षि दयानन्द स्मृति भवन
सम्पर्कः सेवा राम आर्य मों 9413205943

कोटा संभागीय शिविर

कोटा संभागीय शिविर मई माह
सम्पर्कः रमेश गोस्वामी
(जिला संचालक कोटा) 9461182706

बीकानेर संभागीय शिविर

बीकानेर संभागीय शिविर मई माह, स्थान –श्री डूंगरगढ़
सम्पर्क श्री सुभाष शास्त्री (संभाग संचालक) मों 9414416410 श्री अमित आर्य (जिला संचालक) मों 9929946469

इन्द्रियाणां विचरतां, विषयेष्वपहारिषु । संयमे यत्नमातिष्ठेद्, विद्वान् यन्तेव वाजिनम् ।। – मनु. 2.88 ।।
अर्थात् विद्वान् मनुष्य, अपनी ओर आकर्षित करने वाले विषयों में विचरने वाली इन्द्रियों को नियन्त्रित करने में उसी प्रकार प्रयत्न करें, जैसे सारथी घोड़ों के नियन्त्रण में यत्न करता है।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान द्वारा किया गया निरीक्षण

आर्य प्रतिनिधि सभा अधिकारियों ने किया समाजों का निरीक्षण कार्य विस्तार के लिए दिनांक 29,30 मार्च एवं 1 अप्रेल 2018 को आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों ने आर्य समाजों की गतिविधि जानने तथा प्रचार कार्य को गति देने की दृष्टि से विभिन्न आर्य समाजों का निरीक्षण किया, जिसमें निम्न अधिकारी शामिल रहें ।

1 श्री सुखलाल आर्य आय व्याय निरीक्षक
2 श्री ब्रह्मप्रकाश आर्य उपनिदेशक बाल अधिकार आयोग राज.
3 श्री सुभाष शास्त्री अन्तरंग सदस्य सभा
4 श्री देवेन्द्र शास्त्री
5 श्री दीपक शास्त्री भजनोपदेशक सभा
6 श्री देवव्रत शास्त्री वैदिक पुरोहित
7 श्री गोपाल आर्य व्यवस्थापक सभा कार्यालय

1 आर्य समाज छोटी खाटू नागौर

दिनांक 29.3.2018 को सभा अधिकारी श्री सुभाष शास्त्री, देवेन्द्र शास्त्री, गोपाल आर्य ने छोटी खाटू के माणक चन्द जी एवं प्रधान श्री सहाड़ा जी से विचार विमर्श किया, श्री माणक चन्द जी ने आर्य समाज के प्रचार प्रसार के लिए प्रचार वाहन हेतु विशेष आर्थिक सहयोग दिया है। आर्य समाज में गतिविधियों के नियमित सचांलन हेतु प्रचारक भेजना प्रस्तावित है।

2 आर्य समाज लाडनू

वर्तमान में इस समाज का मुख्य संचालन श्री रामचन्द्र आर्य देख रहें हैं राहु गेट पर मुख्य बाजार से लगते भवन के द्वितीय तल पर बैंक 2012 से बैंक का संचालन किया जाता है जिसका किराया 2 वर्ष बाद आर्य समाज को सीधा प्राप्त होने लगेगा आय व्यय का निरीक्षण किया गया। प्रचार वाहन के लिए महत्त्वपूर्ण आर्थिक सहयोग प्राप्त किया दशाशं आदि की नियमित प्राप्ति सभा को प्राप्त हो रही है।

3 आर्य समाज सुजानगढ चुरु

यह आर्य समाज मुख्य बाजार में स्थित है दुकानों के किराये को लेकर पदाधिकारियों मे विवाद है जिसकों शीघ्र ही निस्तारित किया जायेगा गतिविधियाँ सामान्य रुप से संचालित की जा रही है। भवन के एक ओर धर्मार्थ चिकित्सालस संचालित है। यज्ञ शाला पर मुख्य हवन कुण्ड के अलग चार हवन कुण्ड बने हुए हैं।

4 आर्य समाज दुजार नागौर

आर्य समाज सुजानगढ, लाडनु तथा दुजार के निरीक्षण कार्यक्रम मे श्री उमेश आर्य मंगलपुरा अधिष्ठाता आर्य वीर दल लाडनु का विशेष सहयोग रहा श्री उमेश जी वर्तमान में लाडनू मे आयुर्वेद चिकित्साधिकारी है तथा आर्य समाज की गतिविधियों में प्रान्तीय इकाई के साथ सक्रिय रहते है। आर्य समाज दुजार जो लाडनु से लगभग लगता हुआ है में पुराना लगभग सौ साल पुराना भवन है साप्ताहिक नियमित सत्संग चलता है आय का स्रोत केवल जन सहयोग एवं सदस्यता शुल्क है श्री बीरमाराम आर्य यहाँ युवा कार्यकर्ता है वर्ष में एक बार वार्षिकोत्सव के रुप में बड़ा आयोजन किया जाता है। इस बार सितम्बर में भजनोपशिका अंजली आर्या का कार्यक्रम रखा गया जिसमे लगभग 800 ग्रामीण महिला पुरुषों की उपस्थिति रही । सभा को दशांश आदि की नियमानुसार रिपोर्ट प्रेषित की जाती हैं।

5 आर्य समाज कुचामन नागौर

दिनांक 1.4.2018 रविवार का इस आर्य समाज के पदधिकारियों के साथ सभा के अधिकारियों ने बैठक की जिसमें श्री गजाधर आर्य, श्री कपिल शर्मा , श्री द्वारका प्रसाद जी तापड़िया जी आदि थे । इस आर्य समाज में चार दुकाने है जो किराये पर चलती है। दुकानदार से किराये पर विवाद है। सभा अधिकारियों ने इसे निपटाने का प्रयास किया। यहाँ पर प्रचार प्रसार की नियमित गतिविधियाँ के संचालन के लिए विद्धान् सन्यासी , उपदेशक , गायक , पुरोहित , व्यायाम शिक्षक आदि की मांग किए जाने पर सभा द्वारा प्रेषित किए जायेंगे समस्त गति विधियों का संचालन आर्य समाज के सिद्धान्तों के अनुकूल स्थानीय इकाई संचालित करेगी । आय व्याय निरीक्षक श्री सुखलाल जी के निर्देशानुसार आर्य समाज कुचामन की स्थानीय इकाई द्वारा नियमानुसार वार्षिक मानचित्र भर कर प्रषित किया जायेगा तथा दशांश प्रतिनिधि सभा को भेजा जायेगा ।

समाज का साप्ताहिक सत्संग नियमित होता है तथा भवन के एक भाग का पुन निर्माण किया जा रहा है ।

उपर्युक्त समस्त कार्यवाही की मूल कॉपी जो श्री सुखलाल आर्य द्वारा तैयार की जाती है। सभा कार्यालय के पास उपलब्ध है।

सुखलाल आर्य
आय व्यय निरीक्षक एवं अन्तरंग सदस्य
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

नव संवत्सरेष्टि यज्ञ में आहुति देते डॉ. सुधीर शर्मा आर्य समाज, निंदड़, जयपुर

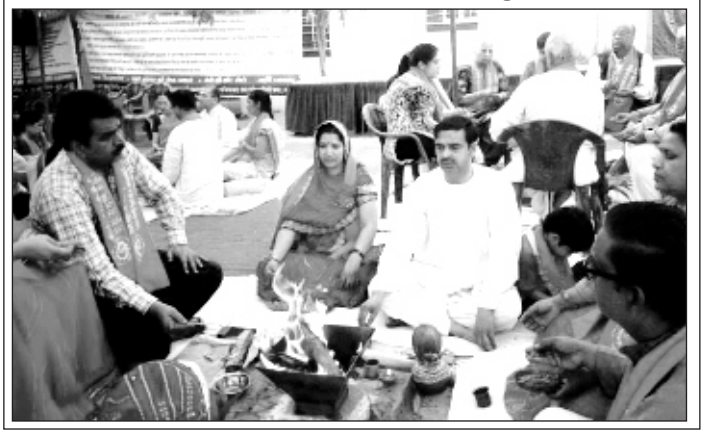

- **जब बहुत सा धन असंख्य प्रयोजन से अधिक होता है तब आलस्य, पुरुषार्थरहितता; ईर्ष्या, द्वेष, विषयासक्ति और प्रमाद बढ़ता है। – एकादश समुल्लास, सत्यार्थ प्रकाश**

नव सृष्टिसंवत् का भव्य यज्ञ आयोजन के साथ किया स्वागत

सांभर आर्य समाज, जयपुर में 101 दंपत्तियों द्वारा सामूहिक यज्ञ किया गया। उक्त आयोजन स्वामी सोमानंद जी सरस्वती के सानिध्य में संपन्न हुआ। कार्यक्रम के सफल आयोजन में आर्य समाज के पुरोहित एवं भजनोपदेशक श्री रविदत्त जी मेधार्थी, श्री यादराम जी शास्त्री एवं श्री दीपक जी शास्त्री द्वारा विश्वशांति राष्ट्रसमृद्धि एवं पर्यावरणीय शुद्धि को विषयीकृत करते हुए सुमधुर भजनोपदेश किए गए। अपने संबोधन में आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री डॉ. सुधीर कुमार शर्मा ने कहा कि सौभाग्यशाली दंपत्तियों को ही यज्ञ में यजमान बनने का अवसर प्राप्त होता है साथ ही नव संवत्सर की विषयवस्तु पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यजमान को कालगणना का ज्ञान होना आवश्यक है । इस संबंध में शतपथ ब्राह्मण में भी कहा गया है कि काल की गति से अनभिज्ञ व्यक्ति यजमान बनने का अधिकारी नहीं होता– संवत्सरो यजमानः (मा. शतपथ 11 .27 .32)। उक्त कार्यक्रम में यशपाल यश एवं स्वामी सोमानंद जी ने भी विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर आर्य वीर दल राजस्थान के कार्यकारी संचालक श्री देवेंद्र शास्त्री जी भी उपस्थित रहे ।

अतुल अग्रवाल
मंत्री सांभर आर्य समाज, जयपुर।

शहीदी दिवस पर वाहन रैली का आयोजन

आर्यसमाज महामन्दिर, जोधपुर एवं क्रान्तिकारी पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल व्यायामशाला पावटा सी रोड़ के संयुक्त तत्वाधन में शहीदी दिवस पर वाहन रैली का आयोजन किया गया।

आर्य समाज स्थापना दिवस कार्ड का विमोचन

महर्षि दयानन्द एक समाज के ही नहीं पूरे विश्व के प्रेरणा स्त्रोत रहे।

आर्य समाज स्थापना दिवस की शुभकामनाएं। महर्षि दयानन्द एक समाज के ही नहीं पूरे विश्व के लिए प्रेरणा स्त्रोत हैं। जो संदेश उन्होनें दिया भाईचारे का वह पूरे विश्व के काम आ रहा है। उक्त विचार केंद्रीय मंत्री विजय गोयल ने आर्य समाज जिला सभा कोटा द्वारा तैयार किया गया आर्य समाज स्थापना दिवस का बहुरंगीय अभिनंदन कार्ड का कोटा सर्किट हाउस में विमोचन करते हुए व्यक्त किए। उन्होनें कहा कि जब में प्रधानमंत्री कार्यालय में मंत्री था तब वहां पर भी आर्य समाज स्थापना दिवस कार्यक्रम आयोजित किया। मैं समझता हूं कि महर्षि दयानन्द के हम सब पर बहुत उपकार हैं। उन्होनें कहा कि महर्षि दयानन्दकृत सत्यार्थ प्रकाश को जितनी सरल भाषा में बनाए उतने ही ज्यादा से ज्यादा लोग उसे पढेंगे, अधिक से अधिक घरों तक सत्यार्थ प्रकाश पहुंचे ऐसी मेरी कामना है।

- **परमात्मा की बनायी हुई इस सृष्टि में अभिमानी, अन्यायकारी, अविद्वान लोगों का राज्य बहुत दिन तक नहीं चलता ।**

– सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लास

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / 232 / 2017-2019 / आर. एन. आई नं.10471/60

कार्यालय सूचना एवं निर्देश

- समस्त आर्य समाज अपने भवन पर ओ३म् ध्वाज अनिवार्य रूप से फहरायें एवं मुख्य प्रवेश द्वार एवं भवनों के द्वार पर ''आर्य समाज/आर्य समाज मन्दिर'' इस प्रकार अवश्य अंकित करवायें। यथा समय आर्य समाज भवन, मुख्य द्वार, परिसर की बाउण्ड्री वॉल की मरम्मत, कलर पेन्ट आदि करवायें। आर्य समाज की सम्पत्तियों की सुरक्षा का उत्तरदायित्व सम्बन्धित आर्य समाज के पदाधिकारियों का है। आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा कभी भी आर्य समाज का निरीक्षण किया जा सकता है। कृपया अवगत रहें।
- आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान का मुखपत्र ''आर्य मार्तण्ड'' का प्रत्येक अंक नवम्बर–द्वितीय अंक से पीडीएफ फॉरमेट में भी उपलब्ध करवाया जा रहा है। इस फॉर्मेट में प्राप्त करने के लिए अपना ईमेल पता, नाम एवं सम्पर्क सूत्र aryamartand@gmail.com पर भेजें। वाट्स एप्प पर ''सत्यार्थ प्रकाश क्रान्ति, आर्य वीर राज. सूचना, आर्य वीर दल के अन्य सभी ग्रुप्स में नियमित रूप से उपलब्ध करवाया जा रहा है ।
- आर्य समाजों में होने वाली समस्त गतिविधियाँ ऋषि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों एवं वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार ही संचालित की जावें। उक्त प्रयोजनार्थ ही आर्य समाज संस्थाएँ अपने परिसर एवं भवन अन्य सम्बन्धित संस्थाओं को नियमानुसार उपलब्ध करवा सकती हैं। महर्षि दयानंद के सिद्धान्तों के प्रतिकूल उद्देश्यों वाली संस्थाओं एवं संगठनों आदि के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा एतदर्थ स्वीकृति नहीं है। साथ ही समस्त आर्य समाजों के पदाधिकारियों को यह भी निर्देशित किया जाता है कि वे आर्य समाज के भवन अथवा परिसर को व्यवसाय की दृष्टि से किराये पर देने से पूर्व सभा से लिखित में स्वीकृति अनिवार्यतः प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में यह भी संसूचनीय है कि आर्य समाज के पदाधिकारियों को समाज के भवन, दुकान, जमीन अथवा किसी भी प्रकार की परिसम्पत्तियों को विक्रय करने का अधिकार नहीं है।

आतिथ्य –आहुति

आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान द्वारा जयपुर में कार्यालय परिसर में निरन्तर आने वाले अतिथियों के लिए अस्थायी आवास एवं भोजन हेतु संचालित आतिथ्य–यज्ञ में अपनी बहुमूल्य आहुति देकर इस पवित्र यज्ञ को सुचारू रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे सभी आहुतिदाताओं का बहुत–बहुत आभार ।

अन्य जो भी इस व्यवस्था के सफल संचालन में अपनी आहुति भेंट करने के इच्छुक हों वे 9352547258 पर सम्पर्क कर सकते हैं। जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ, स्मृति, विवाह आदि अवसरों पर आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित इस अतिथि यज्ञ में अपनी आहुति अर्पित कर पुण्यभागी बनें।

आगामी कार्यक्रम

1. आर्ष गुरुकुल आबू पर्वत देलवाड़ा सिरोही का 28 वाँ भव्य त्रि दिवसीय वार्षिकोत्सव दिनांक 26–27–28 मई 2018 को बडे धूमधाम से आयोजित किया जा रहा है।
   सम्पर्कः आचार्य ओम प्रकाश आर्य मों 9414589510
   रजनीकान्त आर्य मों 9461046483
2. इस वर्ष भारत की राजधानी नई दिल्ली में होगा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन – 2018 दिल्ली 25–26–27–28 अक्तूबर, 2018

आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वारा मुद्रित।
मु. सम्पादक एवं प्रकाशक डॉ. सुधीर कुमार शर्मा, मंत्री–आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

टिकट

प्रेषकः-
सम्पादक, आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर-302004

यूको बैंक **A/c No.:18830100010430** तिलक नगर, जयपुर
IFSC - UCBA 0001883

प्रेषित

विशेष – आर्य्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। उनमें सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।